नल संवत्सर 2079

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
जयपुर

आज के दिन से 1, 91, 38,13,122 वर्ष पूर्व ईश्वर ने सृष्टि की रचना प्रारम्भ की, इसलिये हम रोज संकल्प लेते हैं :-

ऊँ अस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये रुद्रविंशतिकायां नलनामसंवत्सरस्य 2079 तमस्य विक्रमाब्दस्य.....

संवत्सर 60 होते हैं, उनमें यह 50वाँ नल नामक सम्वत्सर है। संवत्सर का फल भी उसके नाम के स्वरूप के अनुसार ही होता है, ऐसी प्रजापति की व्यवस्था रही है। नल संवत्सर का क्या महत्व है ? देखें -

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोको विदेहश्च पुण्यश्लोको जनार्दनः।।

नल अद्भुत व्यक्तित्व हैं जो सतयुग में जन्मे । रामायण में भी इनका उल्लेख मिलता है, पद्म पुराण, स्कन्द पुराण, ब्रह्म पुराण आदि में विस्तृत वर्णन मिलता है, महाभारत में तो नलोपाख्यान विस्तृत है ही। शतपथ ब्राह्मण में भी नल को वास्तुशास्त्र के देवता के रूप में स्मरण किया है। नल का राजस्थान से भी पूर्वजन्म का सम्बन्ध है । यह कथा पुराण में मिलती है।

शिव का यतिनाथ रूप

यह इस प्रकार है और हमारे लिए गौरव की बात है :-

प्राचीन समय में अर्बुद नामक पर्वत के पास आहुक नाम का एक भील रहता था। उसकी पत्नी का नाम आहुका था। पति-पत्नी दोनों शिव भक्त थे। वे अपने गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए अपनी दिनचर्या का अधिकांश समय

शिवोपासना में व्यतीत करते थे। उस भील दंपति का जीवन भोले भंडारी शिव की पूजा-अर्चना के लिए पूर्णतया समर्पित था।

एक दिन संध्या के समय जब भगवान भास्कर अस्ताचल की ओर बढ रहे थे, तब भगवान शंकर भील की भक्ति की परीक्षा के लिए सन्यासी का वेश धारण कर उनकी कुटिया पर पहुँचे। उस समय केवल आहुका ही वहाँ थी। उसने संन्यासी को प्रणाम किया। संन्यासी बोले - 'भील! मुझे आज की रात बिताने के लिए जगह दे दो। मैं कल प्रातःकाल यहां से चला जाऊंगा।

आहुका ने कहा - 'यतिनाथ! हमारी यह झोंपड़ी छोटी है। इसमें केवल दो व्यक्ति ही ठहर सकते हैं। अभी सूर्यास्त नहीं हुआ है और कुछ रोशनी है, अतः आप रात बिताने के लिए किसी अन्य स्थान को तलाश लें।'

यह सुनकर आहुक बोला - 'प्रिये! ये यतिनाथ हमारे अतिथि हैं। हम गृहस्थ हैं। गृहस्थधर्मानुसार हमें इनकी सेवा करनी चाहिए। इन्हें किसी अन्य स्थान पर जाने के लिए नहीं कहना चाहिए। अतः रात में तुम दोनों झोंपड़ी के अंदर रहो और मैं शस्त्र लेकर बाहर पहरा दूंगा।'

भोजन के बाद यतिनाथ और भील की पत्नी कुटिया के अंदर सो गए तथा आहुक शस्त्र लेकर बाहर पहरा देने लगा। रात के समय जंगली हिंसक पशुओं से बचाव करता रहा, लेकिन प्रारब्धानुसार जंगली पशु उसे मार कर खा गए। प्रातःकाल आहुका ने कुटिया से बाहर निकल कर अपने पति को मृत देखा, तो वह बहुत दुखी हुई। जब यति कुटिया से बाहर निकले, तो आहुक को मृत देख कर उन्होंने भीलनी से कहा - 'यह सब मेरे कारण हुआ है।'

आहुका बोली - 'यतिनाथ! आप दुखी मत होइए। मेरे पति की मृत्यु प्रारब्धवश हुई है। गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए इन्होंने अपने प्राण त्याग दिए हैं। इनका कल्याण हुआ है। आप मेरे लिए एक चिता तैयार कर दें, जिससे मैं पत्नी धर्म का पालन करते हुए अपने पति का अनुसरण कर सकूं।' आहुका की बात सुनकर संन्यासी ने उसके लिए एक चिता तैयार कर दी। ज्यों ही आहुका ने चिता में प्रवेश किया, त्यों ही भगवान शिव साक्षात् अपने रूप में उसके समक्ष प्रकट हो गए और उसकी प्रशंसा करते हुए बोले - 'तुम धन्य हो आहुका! मैं तुमसे अति प्रसन्न हूँ। तुम इच्छानुसार वर माँगो। तुम्हारे लिए मुझे कुछ भी अदेय नहीं है।

भगवान शिव को अपने सामने देख कर और उनकी वाणी सुन कर आहुका आत्मविभोर हो गई। उसके मुख से वचन नहीं निकले। उसकी उस स्थिति को देख कर देवाधिदेव अति प्रसन्न होकर बोले - 'मेरा यह पति रूप भविष्य में

हंस रूप से प्रकट होगा। मेरे कारण तुम पति-पत्नी का विछोह हुआ है, मेरा हंस रूप तुम दोनों का मिलन करवाएगा। तुम्हारा पति निषध देश में राजा वीरसेन का पुत्र नल होगा और तुम विदर्भ नगर में भीमराज की पुत्री दमयंती होओगी। मैं हंसावतार लेकर तुम दोनों का विवाह कराऊँगा। तुम लोग राजभोग भोगने के पश्चात मोक्ष पद प्राप्त करोगे जो बड़े - बड़े योगेश्वरों के लिए भी दुर्लभ है।' इतना कह कर भगवान शिव अंतर्धान हो गए और भीलनी आहुका ने अपने पति के मार्ग का अनुसरण किया।

दूसरे जन्म में भील राजा नल और भीलनी दमयंती के नाम से जाने गए। यतिनाथ शिव उस समय हंस रूप में प्रकट हुए और उन्होंने ही नल एवं दमयंती का विवाह कराया। हंस का अवतार लेकर भगवान शिव ने ही उनके बीच संदेश वाहक का कार्य कर उन्हें सुख पहुँचाया था।

कलियुग में दोषों को दूर करने के लिए नल और दमयंती का स्मरण किया जाता है।

स्कंद पुराण में नल द्वारा चर्ममुंडा देवी की स्तुति का वर्णन है, जो निम्न प्रकार है -

सिद्धक्षेत्र के रुद्रावर्त क्षेत्र में पूर्वकाल में महात्मा राजा नल ने चर्ममुण्डा देवी की स्थापना की थी। वीरसेन के पुत्र नल इस भूमण्डल के राजा थे,जो समस्त सदुणों से युक्त थे। विदर्भदेश की राजकुमारी दमयन्ती उनकी पतिव्रता पत्नी थी। एक समय राजा नल ने कलियुग से आविष्ट हो कर अपने भाई पुष्कर के साथ जुआ खेला । उसमें वे अपना सारा राज्य हार गये । तदनन्तर नल अपनी स्त्री को साथ लेकर गहन वन के भीतर चले गये । वहाँ उन्होंने सोचा कि यदि दमयन्ती राजा भीम के घर चली जाय, तो वनवास के कष्ट से मुक्ति हो सकती है। इसलिये रात में इसको सोती हुई छोड़कर मैं दूर चला जाऊँगा, जिससे यह साध्वी दमयन्ती मुझसे विलग होकर कुण्डिनपुर को चली जायगी।

ऐसा निश्चय करके राजा नल सुख से सोयी हुई दमयन्ती को छोड़ कर घोर वन में चले गये । प्रातःकाल उठ कर दमयन्ती जब इधर-उधर देखने लगी,तो उसने अपने पास नल को नहीं पाया । तब वह दुःख से आतुर हो वन में करुण स्वर से विलाप करने लगी और धीरे-धीरे कुण्डिनपुर की राह लेकर अपने पिता के राजमहल में जा पहुँची । नल भी उस वन को छोड़ कर दूसरे बड़े भारी वन में चले गये और घूमते-घूमते हाटकेश्वर क्षेत्र में जा पहुँचे । इसी बीच महानवमी का दिन आ गया । तदनन्तर नल ने वहाँ चर्ममुण्डधारिणी दुर्गा की मृण्मयी मूर्ति बना कर उसका पूजन किया और फल मूलों का भोग लगा कर देवी को तृप्त किया । तत्पश्चात् वे देवी के आगे हाथ जोड़ कर खड़े हो गये तथा बड़ी श्रद्धा के साथ स्तुति करने लगे-

श्रीचामुण्डास्तोत्रम्

जय सर्वगते देवि चर्ममुण्डधरे वरे ।
जय दैत्यकुलोच्छेददक्षे दक्षात्मजे शुभे ॥ 1॥

कालरात्रि जयाचिन्त्ये नवम्यष्टमिवल्लभे ।
त्रिनेत्रे त्र्यम्बकाभीष्टे जय देवि सुरार्चिते ॥ 2॥

भीमरूपे सुरूपे च महाविद्ये महाबले ।
महोदये महाकाये जयदेवि महाव्रते ॥ 3॥

नित्यरूपे जगद्धात्रि सुरामांसवसाप्रिये ।
विकरालि महाकालि जय प्रेतजनानुगे ॥ 4॥

शवयानरते रम्ये भुजङ्गाभरणान्विते ।
पाशहस्ते महाहस्ते रुधिरौघकृतास्पदे ॥ 5॥

फेत्कारारवशोभिष्ठे गीतवाद्यविराजिते ।
जयानाद्ये जय ध्येये भर्गदेहार्धसंश्रये ॥ 6॥

त्वं रतिस्त्वं धृतिस्तुष्टिस्त्वं गौरी त्वं सुरेश्वरि ।
त्वं लक्ष्मीस्त्वं च सावित्री गायत्री त्वमसंशयम् ॥ ॥

यत्किञ्चित्त्रिषु लोकेषु स्त्रीरूपं देवि दृश्यते ।
तत्सर्वं त्वन्मयं नात्र विकल्पोऽस्ति मम क्वचित् ॥ 8॥

येन सत्येन तेन त्वमत्रावासं द्रुतं कुरु ।
सान्निध्यं भक्तितस्तुष्टा सुरासुरनमस्कृते ॥ 9॥

सूत उवाच -

एवं स्तुता च सा देवी नलेन पृथिवीभुजा ।

प्रोवाच दर्शनं गत्वा तं नृपं भक्तवत्सला ॥ 10॥

श्रीदेव्युवाच -

परितुष्टाऽस्मि ते वत्स स्तोत्रेणानेन साम्प्रतम् ।

तस्माद्गृहाण मत्तस्त्वं वरं मनसि संस्थितम् ॥ 11॥

नल उवाच -

दमयन्तीति मे भार्या प्राणेभ्योऽपि गरीयसी ।

सा मया निर्जने मुक्ता वने व्यालगणान्विते ॥ 12॥

अखण्डशीलां निर्दोषां यथाहं त्वत्प्रसादतः ।

लभे भूयोऽपि तां देवि तथात्र कुरु सत्वरम् ॥ 13॥

स्तोत्रेणानेन यो देवि स्तुतिं कुर्यात्पुरस्तव ।

तत्रैव दिवसे तस्मै त्वया देयं मनोगतम् ॥ 14॥

वाञ्छा कल्पलता में भी यह मन्त्र मिलता हैः-

दमयंती नलभ्यां तु नमस्कारं करोम्यहम् ।

अविवादो भवेत्तस्य, कलि दोष प्रशांतये।।

महाभारत में भी निम्न श्लोक प्राप्त होता है :-

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।

ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्।।